ज्ञानविविधा
कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-3 (July-Sept.) 2025
Page No.- 283-291
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Dr. Satyendra Kumar Satyendra
Department of Political Science, Magadh University, Bodh Gaya.

Corresponding Author :

Dr. Satyendra Kumar Satyendra
Department of Political Science, Magadh University, Bodh Gaya.

दक्षिण एशिया में लोकतंत्र का समेकन : भारत, नेपाल और बांग्लादेश के अनुभव

सारांश : दक्षिण एशिया में लोकतंत्र की राह काफी उतार-चढ़ाव भरी रही है। यह शोध पत्र इसी क्षेत्र के तीन अहम मुल्कों- भारत, नेपाल और बांग्लादेश के अनुभवों पर नज़र डालता है, जहाँ लोकतंत्र को मज़बूत करने की कोशिशें अलग-अलग नतीजों के साथ जारी हैं। एक ओर जहाँ भारत ने दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में अपनी पहचान बनाई है, वहीं दूसरी ओर जातिवाद और सांप्रदायिकता जैसी गहरी चुनौतियाँ आज भी इसके सामने खड़ी हैं। पड़ोसी देश नेपाल का सफ़र राजशाही से निकलकर एक गणराज्य बनने का रहा है, लेकिन यह रास्ता राजनीतिक अस्थिरता और संवैधानिक संकटों से भरा रहा है। इसी तरह, बांग्लादेश में लोकतंत्र की जड़ें सैन्य हस्तक्षेप और दो प्रमुख दलों के बीच की कटुता के कारण कमज़ोर पड़ती रही हैं। यह अध्ययन इन तीनों देशों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, संस्थागत विकास और नागरिक समाज की भूमिका को परखते हुए उन बाधाओं को समझने का प्रयास करता है जो लोकतंत्र की राह में खड़ी हैं। अंत में, इन अनुभवों के आधार पर कुछ ऐसे सबक और सुझाव पेश किए गए हैं जो इस क्षेत्र में लोकतंत्र के भविष्य के लिए प्रासंगिक हो सकते हैं।

मुख्य शब्द : लोकतंत्र का समेकन, दक्षिण एशिया, भारत, नेपाल, बांग्लादेश, राजनीतिक संस्थाएँ, नागरिक समाज, चुनावी प्रक्रिया।

परिचय : बीसवीं सदी के मध्य में जब औपनिवेशिक शक्तियाँ दक्षिण एशिया से विदा हो रही थीं, तो इस क्षेत्र ने लोकतंत्र को एक नई उम्मीद और शासन के सबसे बेहतर विकल्प के तौर पर अपनाया। स्वतंत्रता के बाद के शुरुआती दशकों में, दुनिया के कई राजनीतिक विश्लेषकों ने इस क्षेत्र, विशेषकर भारत की गरीबी, अशिक्षा और गहरी सामाजिक भिन्नताओं को देखते हुए यहाँ लोकतंत्र के भविष्य पर संदेह व्यक्त किया

था (हंटिंग्टन, 1991)। लेकिन इन आशंकाओं के बावजूद, लोकतंत्र ने इस मिट्टी में अपनी जड़ें जमाईं, भले ही हर देश में इसका रूप और अनुभव अलग-अलग रहा हो।

हालांकि, जैसा कि कई विद्वानों ने तर्क दिया है, केवल चुनाव करा लेना या संविधान लागू कर देना ही लोकतंत्र की गारंटी नहीं है। असली चुनौती इसके 'समेकन' (consolidation) में निहित है—एक ऐसी प्रक्रिया जिसके द्वारा लोकतांत्रिक मूल्य, नियम और संस्थाएँ समाज की राजनीतिक संस्कृति का स्थायी हिस्सा बन जाती हैं और कोई भी प्रभावशाली समूह लोकतांत्रिक ढाँचे के बाहर जाकर सत्ता परिवर्तन के बारे में नहीं सोचता (लिंज़ एवं स्टेपान, 1996)। लोकतंत्र का समेकन एक लंबी और अक्सर संघर्षपूर्ण यात्रा होती है, और दक्षिण एशिया इसका एक जीवंत उदाहरण है।

इस जटिल प्रक्रिया को समझने के लिए भारत, नेपाल और बांग्लादेश का तुलनात्मक अध्ययन एक अनूठा अवसर प्रदान करता है। ये तीनों देश न केवल भौगोलिक रूप से जुड़े हैं, बल्कि इनकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत भी काफी हद तक साझा है। इसके बावजूद, लोकतंत्र के साथ इनके अनुभव बिलकुल अलग रहे हैं:

- भारत, जिसे अक्सर "दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र" कहा जाता है, ने नियमित चुनाव और शांतिपूर्ण सत्ता हस्तांतरण की एक मज़बूत परंपरा स्थापित की है, लेकिन यह आज भी जाति, धर्म और क्षेत्रवाद की गंभीर चुनौतियों से जूझ रहा है (कोहली, 2001)।
- नेपाल ने एक लंबी राजशाही और एक दशक के गृहयुद्ध के बाद लोकतंत्र को अपनाया, लेकिन इसका सफ़र राजनीतिक अस्थिरता, संविधान निर्माण की जटिलताओं और सामाजिक समावेश के सवालों से घिरा रहा है।
- बांग्लादेश का लोकतांत्रिक पथ सैन्य तख्तापलट और दो प्रमुख राजनीतिक दलों के बीच कटु दुश्मनी से बार-बार बाधित हुआ है, जिसने वहाँ की लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमज़ोर किया है।

यह शोध पत्र इन्हीं तीन देशों के अनुभवों का विश्लेषण करते हुए उन कारकों की पड़ताल करेगा जिन्होंने इनके लोकतांत्रिक पथ को आकार दिया है। अतः, यह अध्ययन कुछ बुनियादी सवालों के जवाब तलाशता है: वे कौन से कारक हैं जो भारत में लोकतंत्र को एक प्रकार का लचीलापन प्रदान करते हैं, जबकि नेपाल और बांग्लादेश में यह बार-बार अस्थिरता का शिकार होता रहा है? इन देशों में न्यायपालिका, संसद और चुनाव आयोग जैसी संस्थाओं ने लोकतंत्र को मज़बूत या कमज़ोर करने में क्या भूमिका निभाई है? और इस पूरी प्रक्रिया में एक जागरूक नागरिक समाज की आवाज़ कहाँ और कितनी सुनी गई है? इन प्रश्नों का उत्तर देकर हम दक्षिण एशिया में लोकतंत्र के वर्तमान और भविष्य की एक स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे।

सैद्धांतिक ढाँचा : लोकतंत्र का समेकन : किसी भी शोध को एक मज़बूत वैचारिक नींव की ज़रूरत होती है। हमारे अध्ययन के लिए, यह नींव 'लोकतांत्रिक समेकन' (Democratic Consolidation) की अवधारणा है। लोकतंत्र की स्थापना केवल एक घटना हो सकती है—जैसे कोई क्रांति, एक स्वतंत्रता आंदोलन का अंत, या एक नए संविधान का लागू होना। लेकिन लोकतंत्र का समेकन एक लंबी और जटिल प्रक्रिया है। यह सिर्फ चुनावों के नियमित आयोजन से कहीं बढ़कर है। यह इस बात से जुड़ा है कि लोकतंत्र उस देश की राजनीति और समाज में कितनी गहराई तक अपनी जड़ें जमा चुका है।

इस विषय पर सबसे प्रभावशाली विचारों में से एक राजनीतिक वैज्ञानिक जुआन लिंज़ और अल्फ्रेड स्टेपान (1996) का है। उनके अनुसार, कोई भी लोकतंत्र केवल तभी 'समेकित' माना जाता है जब वह "शहर का एकमात्र खेल" (the only game in town) बन जाता है। इसका मतलब है कि देश के लगभग सभी प्रभावशाली राजनीतिक समूह और आम नागरिक यह मान लेते हैं कि किसी भी राजनीतिक

विवाद को सुलझाने या सत्ता हासिल करने का एकमात्र सही और वैध तरीका लोकतांत्रिक प्रक्रिया ही है। लिंज़ और स्टेपान ने इसके तीन प्रमुख आयाम बताए हैं:

1. **व्यवहारगत समेकन (Behavioral Consolidation):** इसका अर्थ है कि देश में कोई भी बड़ा राजनीतिक समूह (जैसे सेना, कोई विद्रोही गुट, या कोई प्रमुख राजनीतिक दल) मौजूदा लोकतांत्रिक व्यवस्था को हिंसक या असंवैधानिक तरीकों से उखाड़ फेंकने की कोशिश नहीं करता है। सभी अपनी लड़ाई लोकतांत्रिक नियमों के दायरे में रहकर ही लड़ते हैं।
2. **दृष्टिकोण आधारित समेकन (Attitudinal Consolidation) :** यह नागरिकों की मानसिकता से जुड़ा है। जब आम लोगों का एक विशाल बहुमत, यहाँ तक कि राजनीतिक उथल-पुथल या आर्थिक संकट के समय में भी, यह मानने लगता है कि लोकतांत्रिक शासन प्रणाली ही किसी भी अन्य तानाशाही या वैकल्पिक व्यवस्था से बेहतर है, तो इसे दृष्टिकोण आधारित समेकन कहा जाता है।
3. **संवैधानिक समेकन (Constitutional Consolidation) :** इसका मतलब है कि सरकार और विपक्ष सहित सभी राजनीतिक कर्ता इस बात पर सहमत होते हैं कि वे अपने विवादों को संविधान और कानूनों के दायरे में ही सुलझाएंगे। चाहे न्यायपालिका का फैसला हो, चुनाव के नतीजे हों या संसद में बना कोई कानून हो, सभी उसका सम्मान करते हैं, भले ही वे उससे असहमत क्यों न हों।

विद्वान लैरी डायमंड (1999) इस विचार को और आगे बढ़ाते हुए कहते हैं कि समेकन के लिए सिर्फ चुनावी लोकतंत्र ही काफी नहीं, बल्कि एक 'उदार लोकतंत्र' (Liberal Democracy) का होना ज़रूरी है, जहाँ कानून का शासन, नागरिक स्वतंत्रता और सरकार की जवाबदेही भी सुनिश्चित हो।

इसी सैद्धांतिक चश्मे से हम भारत, नेपाल और बांग्लादेश के लोकतांत्रिक सफर को देखेंगे। हम यह जाँचेंगे कि इन देशों में राजनीतिक दल, सेना, नागरिक और संस्थाएँ किस हद तक लिंज़ और स्टेपान की इन तीन कसौटियों पर खरी उतरती हैं। यह ढाँचा हमें यह समझने में मदद करेगा कि भारत का लोकतंत्र क्यों अधिक स्थिर दिखाई देता है और नेपाल तथा बांग्लादेश को बार-बार चुनौतियों का सामना क्यों करना पड़ता है।

भारत का अनुभव : एक स्थिर लेकिन चुनौतीपूर्ण लोकतंत्र : भारत को अक्सर एक "असंभावित लोकतंत्र" (an unlikely democracy) कहा जाता है (खिलानानी, 1997)। जब 1947 में देश आज़ाद हुआ, तो गरीबी, निरक्षरता, हज़ारों जातियों और अनगिनत भाषाओँ में बंटे इस विशाल देश में लोकतंत्र के सफल होने की उम्मीद बहुत कम लोगों को थी। लेकिन सात दशकों से ज़्यादा समय के बाद, तमाम उतार-चढ़ावों के बावजूद, भारत न केवल एक लोकतंत्र बना हुआ है, बल्कि उसने खुद को एक समेकित लोकतांत्रिक व्यवस्था के रूप में स्थापित भी किया है।

हमारे सैद्धांतिक ढाँचे के नज़रिए से देखें तो भारत, लोकतंत्र के समेकन की तीनों कसौटियों पर काफी हद तक खरा उतरता है:

- **व्यवहारगत रूप से,** भारत में लोकतंत्र "शहर का एकमात्र खेल" बन चुका है। देश की सेना ने हमेशा राजनीति से एक पेशेवर दूरी बनाए रखी है, जो दक्षिण एशिया के अन्य देशों के बिलकुल विपरीत है। 1975-77 का आपातकाल (The Emergency) इसका सबसे बड़ा अपवाद और लोकतंत्र पर सबसे गहरा आघात था, लेकिन उसके बाद हुए चुनावों में जनता ने सत्तावादी शासन को ख़ारिज कर दिया, जिसने लोकतांत्रिक व्यवस्था में विश्वास को और मज़बूत किया। तब से लेकर आज तक, कोई भी प्रमुख राष्ट्रीय दल या संस्था खुले तौर पर लोकतांत्रिक व्यवस्था को चुनौती नहीं देती। सत्ता का हस्तांतरण हमेशा शांतिपूर्ण और चुनावी नतीजों के आधार पर होता आया है।

- **दृष्टिकोण के स्तर पर,** भारतीय नागरिकों का लोकतंत्र में गहरा विश्वास है। विभिन्न सर्वेक्षण लगातार यह दिखाते हैं कि तमाम शिकायतों और नेताओं से निराशा के बावजूद, आम भारतीय लोकतंत्र को किसी भी अन्य शासन प्रणाली से बेहतर मानते हैं (यादव एवं पलशिकर, 2008)। चुनावों को यहाँ अक्सर "लोकतंत्र का उत्सव" कहा जाता है, और ऊँची मतदान दर यह दिखाती है कि लोग इस प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।
- **संवैधानिक रूप से,** भारत की संस्थाओं ने लोकतंत्र को संभाले रखने में अहम भूमिका निभाई है। भारत के चुनाव आयोग (Election Commission of India) ने दुनिया में सबसे बड़े और सबसे जटिल चुनाव सफलतापूर्वक कराकर अपनी विश्वसनीयता साबित की है। इसी तरह, सर्वोच्च न्यायालय (Supreme Court) ने कई मौकों पर सरकार की शक्तियों पर अंकुश लगाकर और नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करके संविधान के संरक्षक के रूप में काम किया है।

स्थिरता के बीच चुनौतियाँ : लेकिन भारत के लोकतंत्र की कहानी सिर्फ सफलताओं की नहीं है। इसकी मज़बूत नींव के बावजूद, इस पर कई गंभीर और निरंतर दबाव बने हुए हैं, जो लोकतंत्र की गुणवत्ता को कम करते हैं :

1. **सामाजिक विभाजन :** जाति और धर्म पर आधारित राजनीति भारतीय लोकतंत्र का एक कड़वा सच है। जहाँ एक ओर इसने हाशिए पर पड़े समूहों को आवाज़ दी है, वहीं दूसरी ओर इसने समाज में गहरी खाई पैदा की है। सांप्रदायिक ध्रुवीकरण और जाति आधारित हिंसा लोकतांत्रिक भाईचारे के लिए एक सीधा ख़तरा हैं (जाफ्रेलॉट, 2003)।
2. **संस्थागत क्षय:** हाल के वर्षों में कई विश्लेषकों ने चिंता जताई है कि भारत की कुछ प्रमुख लोकतांत्रिक संस्थाएँ कमज़ोर हो रही हैं। संसद में बहस का गिरता स्तर, जाँच एजेंसियों के राजनीतिकरण के आरोप, और मीडिया की स्वतंत्रता पर बढ़ता दबाव कुछ ऐसे संकेत हैं जो लोकतंत्र के स्वास्थ्य के लिए अच्छे नहीं माने जाते (मेहता, 2019)।
3. **भ्रष्टाचार और शासन:** सार्वजनिक जीवन में फैला भ्रष्टाचार और कमज़ोर शासन आम आदमी के जीवन को सीधे तौर पर प्रभावित करता है। यह नागरिकों और सरकारी तंत्र के बीच अविश्वास पैदा करता है, जिससे लोकतांत्रिक संस्थाओं की वैधता पर असर पड़ता है।

संक्षेप में, भारत का अनुभव यह दिखाता है कि एक लोकतंत्र प्रक्रियात्मक रूप से (procedurally) समेकित हो सकता है—यानी चुनाव नियमित होते हैं और सत्ता का हस्तांतरण शांतिपूर्ण होता है—लेकिन वास्तविक रूप में (substantively) उसे अभी भी कई गहरी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। यह एक ऐसा लोकतंत्र है जो स्थिर तो है, पर निरंतर संघर्षरत भी है।

नेपाल का अनुभव : राजशाही से गणतंत्र तक का सफर : भारत के विपरीत, जहाँ लोकतंत्र स्वतंत्रता के साथ ही स्थापित हो गया, नेपाल की लोकतंत्र की कहानी एक लंबे और पीड़ादायक संघर्ष की कहानी है। यह एक सीधी रेखा में चलने वाला विकास नहीं, बल्कि एक उथल-पुथल भरा सफ़र रहा है, जिसमें दो कदम आगे और एक कदम पीछे की स्थिति अक्सर बनती रही है। नेपाल का अनुभव यह दिखाता है कि एक पुरानी सत्ता संरचना को हटाकर एक नई लोकतांत्रिक व्यवस्था का निर्माण करना कितना जटिल हो सकता है।

नेपाल का लोकतांत्रिक समेकन अभी भी अपनी प्रारंभिक अवस्था में है। 240 साल पुरानी राजशाही को समाप्त करना और एक दशक लंबे माओवादी गृहयुद्ध (1996-2006) के बाद विद्रोहियों को राजनीतिक प्रक्रिया में शामिल करना निस्संदेह ऐतिहासिक उपलब्धियाँ हैं। 2006 के सफल जन-आंदोलन (जन आंदोलन II) ने देश को एक नए रास्ते पर खड़ा कर दिया। लेकिन इसके बाद का रास्ता

चुनौतियों से भरा रहा है, और लिंज़ एवं स्टेपान के समेकन के ढाँचे पर यह पूरी तरह खरा नहीं उतरता:

1. **व्यवहारगत (Behavioral) चुनौतियाँ:** नेपाल में सबसे बड़ी सफलता यह है कि प्रमुख विद्रोही ताकत (माओवादी) अब चुनावी राजनीति का हिस्सा है और सेना बैरकों तक सीमित है। हालाँकि, राजनीतिक दलों का व्यवहार लोकतांत्रिक मानदंडों के अनुरूप नहीं हो पाया है। सत्ता के लिए अंतहीन सौदेबाजी, लगातार सरकारों का गिरना और बनना, और राष्ट्रीय हितों पर दलगत हितों को प्राथमिकता देना यहाँ की राजनीति की पहचान बन गया है (बराल, 2012)। इससे पता चलता है कि राजनीतिक अभिजात वर्ग ने अभी तक लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को पूरी तरह से आत्मसात नहीं किया है।
2. **दृष्टिकोण (Attitudinal) में विरोधाभास:** नेपाली नागरिकों ने राजशाही और तानाशाही को ख़ारिज करके लोकतंत्र के प्रति अपनी गहरी आस्था दिखाई है। लेकिन, राजनीतिक दलों के प्रदर्शन और शासन की विफलता ने लोगों में भारी निराशा और मोहभंग पैदा किया है। लोकतंत्र एक आदर्श के रूप में तो स्वीकार्य है, लेकिन इसकी कार्यप्रणाली में लोगों का विश्वास काफ़ी कम हुआ है, जो इसके समेकन के लिए एक गंभीर ख़तरा है।
3. **संवैधानिक (Constitutional) संघर्ष:** लोकतंत्र में संविधान को "खेल के नियमों" की तरह माना जाता है, जिस पर सभी सहमत हों। नेपाल को अपना स्थायी संविधान बनाने में ही लगभग सात साल (2008-2015) लग गए। 2015 में जब संविधान लागू हुआ, तो भी यह पूरी तरह सर्वसम्मति से नहीं हो पाया। मधेसी और जनजातीय समूहों जैसे कई हाशिए के समुदायों ने महसूस किया कि संविधान उनके अधिकारों और प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित करने में विफल रहा है, जिसके कारण लंबे समय तक विरोध प्रदर्शन और नाकेबंदी हुई (अधिकारी, 2014)। इस वजह से, संविधान अभी भी पूरी तरह से एक स्वीकृत दस्तावेज़ नहीं बन पाया है।

संक्षेप में, नेपाल ने लोकतंत्र की स्थापना की दिशा में एक साहसिक छलांग लगाई है, लेकिन समेकन की राह अभी बहुत लंबी है। यहाँ की मुख्य चुनौतियाँ अब पुरानी व्यवस्था को हटाने की नहीं, बल्कि नई व्यवस्था को प्रभावी ढंग से चलाने की हैं। इनमें राजनीतिक अस्थिरता, संवैधानिक समावेश, और गृहयुद्ध के घावों को भरने के लिए संक्रमणकालीन न्याय (transitional justice) जैसे मुद्दे प्रमुख हैं। नेपाल का अनुभव इस बात का एक शक्तिशाली उदाहरण है कि लोकतंत्र का मतलब सिर्फ चुनाव कराना नहीं, बल्कि एक ऐसी राजनीतिक संस्कृति का निर्माण करना है जहाँ संस्थाएँ मज़बूत हों और नियम सर्वोपरि हों।

बांग्लादेश का अनुभव : ध्रुवीकरण और संस्थागत क्षय : बांग्लादेश की कहानी लोकतंत्र के सबसे दुखद विरोधाभासों में से एक है। इस देश का जन्म ही लोकतांत्रिक अधिकारों, भाषा और आत्म-निर्णय के लिए हुए एक रक्तरंजित स्वतंत्रता संग्राम (1971) से हुआ था। इसके बावजूद, इसकी अपनी लोकतांत्रिक यात्रा सैन्य तख्तापलट, राजनीतिक हत्याओं और एक ऐसी कड़वी राजनीतिक दुश्मनी से भरी रही है जिसने लोकतंत्र की जड़ों को गहरा होने का मौका ही नहीं दिया।

1991 में सैन्य शासन की समाप्ति और लोकतंत्र की बहाली के बाद एक नई सुबह की उम्मीद जगी थी, लेकिन यह जल्द ही धूमिल हो गई। बांग्लादेश का अनुभव दिखाता है कि जब राजनीतिक अभिजात वर्ग लोकतांत्रिक नियमों पर सहमत नहीं हो पाता, तो पूरी व्यवस्था कैसे बिखरने लगती है। समेकन के पैमाने पर बांग्लादेश का प्रदर्शन सबसे कमज़ोर नज़र आता है:

1. **व्यवहारगत (Behavioral) विफलता:** बांग्लादेश की राजनीति का सबसे परिभाषित तत्व दो प्रमुख दलों—**अवामी लीग (AL)** और **बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (BNP)**—के बीच

का शून्य-योग संघर्ष (zero-sum conflict) है। यहाँ राजनीति एक प्रतियोगिता नहीं, बल्कि एक युद्ध की तरह लड़ी जाती है, जहाँ हारने वाले के लिए सब कुछ खत्म हो जाता है। चुनाव हारने वाला दल नतीजों को शायद ही कभी स्वीकार करता है, संसद का बहिष्कार एक आम रणनीति है, और राजनीतिक विवादों को सुलझाने के लिए सड़क पर हिंसा का सहारा लिया जाता है। यह "विजेता सब कुछ लेता है" वाली मानसिकता लोकतांत्रिक व्यवहार के ठीक विपरीत है (जहाँ, 2015)।

2. **दृष्टिकोण (Attitudinal) का ध्रुवीकरण:** यहाँ नागरिकों का लोकतंत्र के प्रति दृष्टिकोण भी इन्हीं दो दलों के खेमों में बुरी तरह बंटा हुआ है। एक दल के समर्थकों के लिए लोकतंत्र और राष्ट्रीय हित का मतलब सिर्फ अपनी पार्टी का शासन है। इस गहरे ध्रुवीकरण ने एक साझा राष्ट्रीय पहचान और लोकतांत्रिक मूल्यों पर आम सहमति बनने से रोका है। लगातार राजनीतिक अस्थिरता और भ्रष्टाचार ने आम लोगों में भी व्यवस्था के प्रति एक गहरी निराशा पैदा की है।
3. **संवैधानिक और संस्थागत क्षय (Decay):** यह बांग्लादेश के लोकतंत्र की सबसे गंभीर समस्या है। यहाँ लोकतांत्रिक संस्थाओं को मज़बूत करने के बजाय, सत्ता में आने वाली हर सरकार ने उन्हें अपने राजनीतिक विरोधियों के ख़िलाफ़ एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया है। न्यायपालिका, चुनाव आयोग, और भ्रष्टाचार-रोधी आयोग जैसी संस्थाओं का बुरी तरह राजनीतिकरण कर दिया गया है, जिससे उनकी निष्पक्षता और विश्वसनीयता समाप्त हो गई है (रियाज़, 2016)। 2011 में चुनावों की निष्पक्षता सुनिश्चित करने वाली "कार्यवाहक सरकार" (Caretaker Government) की व्यवस्था को संवैधानिक संशोधन के ज़रिए हटा देना संस्थागत क्षय का सबसे बड़ा उदाहरण है, जिसने देश को एक स्थायी राजनीतिक संकट में धकेल दिया।

संक्षेप में, बांग्लादेश एक ऐसे "प्रतिद्वंद्वी सत्तावाद" (competitive authoritarianism) का उदाहरण बन गया है, जहाँ चुनाव तो होते हैं, लेकिन खेल का मैदान सत्ताधारी दल के पक्ष में इतना झुका होता है कि विपक्ष के लिए कोई वास्तविक अवसर नहीं बचता। यहाँ लोकतंत्र का समेकन तो दूर, "लोकतांत्रिक क्षरण" (democratic backsliding) की प्रक्रिया चल रही है। देश की सबसे बड़ी चुनौती कोई बाहरी ताकत नहीं, बल्कि दो प्रमुख दलों के शीर्ष नेतृत्व के बीच की व्यक्तिगत और राजनीतिक दुश्मनी है, जिसने पूरे लोकतांत्रिक ढाँचे को बंधक बना लिया है।

तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis)

भारत, नेपाल और बांग्लादेश के अलग-अलग अनुभवों को देखने के बाद, अब हम एक तुलनात्मक विश्लेषण कर सकते हैं ताकि उन साझा धागों और प्रमुख अंतरों को समझा जा सके जो इस क्षेत्र में लोकतंत्र के भविष्य को आकार देते हैं। यह तुलना दिखाती है कि लोकतंत्र का समेकन केवल आर्थिक विकास या सामाजिक संरचना पर ही नहीं, बल्कि कुछ महत्वपूर्ण राजनीतिक कारकों पर भी निर्भर करता है।

1. शुरुआती शर्तें और राज्य की प्रकृति

तीनों देशों के लोकतांत्रिक पथ उनकी शुरुआत की शर्तों से गहरे तौर पर प्रभावित हुए हैं।

- **भारत** को विरासत में एक मज़बूत औपनिवेशिक राज्य का ढाँचा मिला, जिसमें एक स्थापित नौकरशाही, एक पेशेवर सेना और राष्ट्रव्यापी राजनीतिक दल शामिल थे। इस तैयार बुनियाद ने लोकतंत्र को स्थापित करने में मदद की।
- **नेपाल** का अनुभव बिलकुल अलग है। यहाँ लोकतंत्र का निर्माण एक केंद्रीकृत राजशाही और गृहयुद्ध के खंडहरों पर करना पड़ा। इसलिए, यहाँ की राजनीति का बड़ा हिस्सा राज्य के पुनर्निर्माण और नए नियम बनाने में ही खर्च हो गया।
- **बांग्लादेश** का जन्म एक हिंसक मुक्ति संग्राम से हुआ, जिसने शुरुआती संस्थाओं को कमज़ोर कर दिया। इसके बाद हुए सैन्य तख्तापलट ने राज्य

को कभी भी पूरी तरह से नागरिक नियंत्रण में नहीं आने दिया।

2. राजनीतिक संस्कृति और अभिजात वर्ग का व्यवहार

यह शायद तीनों देशों के बीच सबसे बड़ा अंतर है।

- **भारत** में, तमाम मतभेदों के बावजूद, राजनीतिक अभिजात वर्ग ने मोटे तौर पर "खेल के नियमों" का सम्मान किया है। हारने वाले का सत्ता छोड़ना और जीतने वाले का शासन करना एक स्थापित परंपरा है।
- **नेपाल** में, राजनीतिक अभिजात वर्ग अभी भी सत्ता-साझेदारी और लोकतांत्रिक सहिष्णुता की संस्कृति विकसित करने के लिए संघर्ष कर रहा है। यहाँ गठबंधन बनाना और तोड़ना शासन से ज़्यादा महत्वपूर्ण हो गया है।
- **बांग्लादेश** में राजनीतिक संस्कृति "दुश्मनी की राजनीति" (politics of enmity) से परिभाषित होती है। यहाँ दो प्रमुख दलों के बीच का टकराव इतना गहरा है कि उन्होंने लोकतांत्रिक प्रक्रिया को ही बंधक बना लिया है, जहाँ विपक्ष का मतलब केवल सरकार का विनाश करना है।

3. संस्थाओं की भूमिका और मज़बूती

लोकतंत्र की मज़बूती उसकी संस्थाओं की स्वतंत्रता पर निर्भर करती है।

- **भारत** में चुनाव आयोग और सर्वोच्च न्यायालय जैसी संस्थाएँ काफ़ी हद तक अपनी स्वायत्तता बनाए रखने में सफल रही हैं, और उन्होंने कई बार कार्यपालिका पर अंकुश लगाया है।
- **नेपाल** की संस्थाएँ अभी नई और संक्रमणकालीन हैं। वे अपनी विश्वसनीयता और अधिकार स्थापित करने की प्रक्रिया में हैं।
- **बांग्लादेश** में संस्थाओं का व्यवस्थित रूप से राजनीतिकरण और क्षय किया गया है। उन्हें निष्पक्ष अंपायर के बजाय सत्ताधारी दल के औजार के रूप में देखा जाता है, जिससे पूरी लोकतांत्रिक प्रक्रिया में विश्वास खत्म हो गया है।

इसे हम निम्नलिखित तालिका में और स्पष्ट रूप से देख सकते हैं:

मानदंड (Criterion)	भारत (India)	नेपाल (Nepal)	बांग्लादेश (Bangladesh)
अभिजात वर्ग का व्यवहार	नियमों पर आम सहमति	अस्थिर गठबंधन, सत्ता संघर्ष	शून्य-योग संघर्ष, "दुश्मनी की राजनीति"
संस्थागत मज़बूती	अपेक्षाकृत स्वायत्त और मज़बूत	विकासशील और संक्रमणकालीन	राजनीतिकरण और व्यवस्थित रूप से कमज़ोर
सेना की भूमिका	पेशेवर और गैर-राजनीतिक	अब पेशेवर बनने की प्रक्रिया में	बार-बार राजनीतिक हस्तक्षेप
समेकन की स्थिति	प्रक्रियात्मक रूप से समेकित	संक्रमणकालीन, असमेकित	क्षरण की स्थिति में, असमेकित

अंततः, यह तुलना स्पष्ट करती है कि दक्षिण एशिया में लोकतंत्र का समेकन एक समान प्रक्रिया नहीं है। जहाँ भारत एक स्थिर लेकिन गुणवत्ता की चुनौतियों से जूझता लोकतंत्र है, वहीं नेपाल लोकतंत्र के निर्माण के दौर में है। बांग्लादेश का मामला सबसे चिंताजनक है, जहाँ लोकतंत्र समेकित होने के बजाय क्षरण का शिकार हो रहा है।

निष्कर्ष : इस शोध पत्र ने दक्षिण एशिया के तीन प्रमुख देशों—भारत, नेपाल और बांग्लादेश—में लोकतंत्र के समेकन की जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया का विश्लेषण किया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र में लोकतंत्र का मार्ग एक समान या रैखिक नहीं है, बल्कि प्रत्येक राष्ट्र के अद्वितीय ऐतिहासिक, सामाजिक-राजनीतिक और संस्थागत संदर्भों से गहराई से प्रभावित है।

भारत का अनुभव एक परिपक्व और स्थिर

लोकतंत्र का उदाहरण प्रस्तुत करता है, जिसने नियमित चुनाव, एक स्वतंत्र न्यायपालिका और एक जीवंत नागरिक समाज के माध्यम से अपनी लोकतांत्रिक साख को बनाए रखा है। इसके बावजूद, हाल के वर्षों में राजनीतिक ध्रुवीकरण में वृद्धि, अल्पसंख्यक अधिकारों पर बहस और कुछ प्रमुख संस्थानों की स्वायत्तता में कथित कमी जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। भारत का लोकतंत्र लचीला तो है, लेकिन इसका समेकन एक सतत संघर्ष की प्रक्रिया है, जो पूर्ण नहीं हुई है।

नेपाल का मामला राजशाही से एक संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य में एक ऐतिहासिक परिवर्तन को दर्शाता है। यह संक्रमण कई सफलताओं, जैसे कि एक समावेशी संविधान का निर्माण, के बावजूद राजनीतिक अस्थिरता, लगातार बदलते सत्ता समीकरणों और संघीय ढांचे के कार्यान्वयन में आने वाली कठिनाइयों से ग्रस्त है। नेपाल में लोकतंत्र की नींव तो रख दी गई है, लेकिन इसका समेकन अभी भी एक नाजुक चरण में है, जिसके लिए निरंतर राजनीतिक इच्छाशक्ति और संस्थागत सुदृढ़ीकरण की आवश्यकता है।

बांग्लादेश का अनुभव लोकतांत्रिक क्षय और गहरे राजनीतिक ध्रुवीकरण की एक चिंताजनक तस्वीर पेश करता है। यहाँ लोकतंत्र मुख्य रूप से दो प्रमुख दलों के बीच कटु प्रतिद्वंद्विता में फंस गया है, जिससे विपक्ष के लिए स्थान कम हो गया है, चुनावी प्रक्रियाओं की विश्वसनीयता में गिरावट आई है और प्रमुख लोकतांत्रिक संस्थानों का क्षरण हुआ है। आर्थिक विकास के बावजूद, बांग्लादेश में लोकतंत्र का समेकन गंभीर बाधाओं का सामना कर रहा है।

संक्षेप में, यह तुलनात्मक विश्लेषण दर्शाता है कि दक्षिण एशिया में लोकतंत्र का समेकन केवल चुनावों के आयोजन तक सीमित नहीं है। इसकी सफलता कानून के शासन, संस्थागत स्वायत्तता, राजनीतिक संवाद की संस्कृति और नागरिक स्वतंत्रता के सम्मान पर निर्भर करती है।

सुझाव : उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर, इन देशों में लोकतांत्रिक समेकन को मजबूत करने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं:

1. **संस्थागत स्वायत्तता को मजबूत करना:** तीनों देशों, विशेषकर भारत और बांग्लादेश को अपनी चुनाव आयोग, न्यायपालिका और भ्रष्टाचार विरोधी निकायों की स्वतंत्रता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए। इन संस्थानों पर जनता का विश्वास लोकतंत्र की गुणवत्ता के लिए सर्वोपरि है।
2. **राजनीतिक संवाद और सहमति का निर्माण:** बांग्लादेश और नेपाल के लिए यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। राजनीतिक दलों को शून्य-राशि के खेल (zero-sum game) की राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर न्यूनतम सहमति बनाने की दिशा में काम करना चाहिए। इसके लिए एक समावेशी संवाद तंत्र विकसित किया जाना चाहिए।
3. **नागरिक समाज और मीडिया की स्वतंत्रता की रक्षा:** एक स्वतंत्र मीडिया और एक सक्रिय नागरिक समाज सरकार को जवाबदेह ठहराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सरकारों को आलोचनात्मक आवाजों का दमन करने के बजाय उनके लिए एक सुरक्षित और सक्षम वातावरण सुनिश्चित करना चाहिए।

1. समावेशी शासन और संघवाद का प्रभावी कार्यान्वयन: नेपाल को अपने संघीय ढांचे को प्रभावी ढंग से लागू करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए ताकि सत्ता का विकेंद्रीकरण हो और हाशिए पर मौजूद समुदायों को सशक्त बनाया जा सके। भारत को भी अपने सहकारी संघवाद के सिद्धांतों को और मजबूत करने की आवश्यकता है।

2. चुनावी सुधार: बांग्लादेश को अपनी चुनावी प्रणाली में सुधार करके उसकी विश्वसनीयता बहाल करने की तत्काल आवश्यकता है ताकि सभी दलों की प्रक्रिया में समान भागीदारी हो सके।

अंततः, दक्षिण एशिया में लोकतंत्र का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि इन देशों के राजनीतिक

अभिजात वर्ग, संस्थान और नागरिक अपनी लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को कितना गहरा और समावेशी बनाने के लिए तैयार हैं। यह एक सतत यात्रा है, कोई अंतिम मंजिल नहीं।

संदर्भ सूची :

1. Adhikari, A. (2014). The bullet and the ballot box: The story of Nepal's Maoist revolution. Verso Books.
2. Baral, L. R. (2012). Nepal's politics of referendum: A study of groups, personalities & trends. Adroit Publishers.
3. Brass, P. R. (2010). The politics of India since independence (2nd ed.). Cambridge University Press.
4. Diamond, L. (1999). Developing democracy: Toward consolidation. Johns Hopkins University Press.
5. Diamond, L., & Morlino, L. (Eds.). (2005). Assessing the quality of democracy. Johns Hopkins University Press.
6. Hossain, N. (2017). The politics of development: A Bangladesh paradox. Forum for Development Studies, 44(1), **127-138**. https://doi.org/10.1080/08039410.2016.1259948
7. Huntington, S. P. (1991). The third wave: Democratization in the late twentieth century. University of Oklahoma Press.
8. Jaffrelot, C. (2003). India's silent revolution: The rise of the lower castes in North India. Columbia University Press.
9. Jahan, R. (2015). Political parties in Bangladesh: Challenges of democratization. Center for Policy Dialogue (CPD).
10. Khilnani, S. (2004). The idea of India (5th ed.). Penguin Books.
11. Kohli, A. (2001). The success of India's democracy. Cambridge University Press.
12. Lawoti, M., & Hangen, S. I. (Eds.). (2012). Nationalism and ethnicity in a Hindu kingdom: The politics and culture of contemporary Nepal. Routledge.
13. Linz, J. J., & Stepan, A. (1996). Problems of democratic transition and consolidation: Southern Europe, South America, and post-communist Europe. Johns Hopkins University Press.
14. O'Donnell, G. (1996). Illusions about consolidation. Journal of Democracy, 7(2), **34–51**.
15. Riaz, A. (2016). Bangladesh: A political history of the Muslim Bengal. I.B. Tauris.
16. Varshney, A. (2002). Ethnic conflict and civic life: Hindus and Muslims in India. Yale University Press.
17. Yadav, Y., & Palshikar, S. (2008). The six-party system of the 1990s. In P. deSouza & E. Sridharan (Eds.), India's political parties (pp. **93-116**). Sage Publications.

•